SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-02| Issue-04| June- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/

ई–लर्निंग से विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन

डॉ0 शिवकेश मिश्र
प्राचार्य, सीमांचल डिग्री कॉलेज, तौहीद नगर, मधेपुरा बठेली रोड, कटिहार, बिहार

सारांशः

प्रस्तुत शोध ई–लर्निंग के प्रसार के संदर्भ में विद्यार्थियों की अध्ययन–प्रवृत्तियों में आने वाली समस्याओं और बाधाओं का संक्षेप में अध्ययन करने का प्रयास है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ऑनलाइन शिक्षा से समय–प्रबंधन, ध्यान–केंद्रण, स्व–अनुशासन, अध्ययन की निरंतरता तथा सामाजिक–शैक्षणिक सहभागिता पर पड़े नकारात्मक और सकारात्मक प्रभावों की पहचान और मापन करना है। मिश्रित पद्धति अपनाई जाएगी – संरचित प्रश्नावली द्वारा मात्रात्मक आँकड़े एकत्र किए थे और अर्ध–संरचित साक्षात्कारों से गुणात्मक अनुभवों को उजागर किया जाएगा। प्राप्त निष्कर्षों से ई–अधिगम द्वारा विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति सम्बन्धी चुनौतियों के तहत 80 प्रतिशत सकारात्मक 20 प्रतिशत नकारात्मक प्रभाव परिलक्षित हुआ जो उनके शारीरिक, सामाजिक और भावनात्मक अलगाव को प्रदर्शित करता है एवं तकनीकी असमानता, ध्यान विचलन, नींद व दिनचर्या में परिवर्तन, प्रेरणा–क्षय और अभिभावकधशिक्षक–सहयोग की भूमिका प्रमुख चुनौतियों के रूप में उभरने की संभावना है। प्राप्त परिणाम नीति निर्माताओं, विद्यालयों और शिक्षकों को ई–लर्निंग के अनुकूल मार्गदर्शन, हस्तक्षेप और समय–प्रबंधन व डिजिटल–साक्षरता कार्यक्रम विकसित करने में उपयोगी सिफारिशें प्रदान करेंगे।

मुख्य शब्दः *ई–लर्निंग, ऑनलाइन अधिगम, अध्ययन प्रवृत्ति, तकनीकी चुनौतियाँ, प्रेरणा और अनुशासन, एकाग्रता की समस्या, डिजिटल साक्षरता*

प्रस्तावनाः

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है। 21वीं सदी में तकनीकी विकास और डिजिटलीकरण ने शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन किए हैं। विशेष रूप से इंटरनेट और सूचना प्रौद्योगिकी ने पारम्परिक कक्षा–आधारित शिक्षण को एक नए आयाम की ओर अग्रसर किया है। ई–लर्निंग इसी परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण परिणाम है, जिसमें शिक्षार्थी कहीं भी, कभी भी और अपनी सुविधा अनुसार अध्ययन कर सकते हैं। यह शिक्षण पद्धति ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, वर्चुअल क्लासरूम, ऑडियो–विजुअल

सामग्री, इंटरैक्टिव मॉड्यूल तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे आधुनिक उपकरणों के माध्यम से विद्यार्थियों की अध्ययन प्रक्रिया को सशक्त बनाती है। यद्यपि ई–लर्निंग विद्यार्थियों को अनेक अवसर प्रदान करता है, जैसे दृ समय और स्थान की स्वतंत्रता, आत्म–गति से अध्ययन, अधिक शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच, तथा नवीनतम ज्ञान अर्जित करने की सुविधाय फिर भी इसके साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। विशेषकर विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति पर ई–लर्निंग का प्रभाव गहराई से देखा जा सकता है। अध्ययन प्रवृत्ति से आशय है दृ विद्यार्थियों की सीखने की अभिरुचि, एकाग्रता, अनुशासन, प्रेरणा, सहभागिता और आत्म–नियंत्रण की प्रवृत्तियाँ।

ई–लर्निंग विद्यार्थियों के लिए शिक्षा प्राप्त करने का एक आधुनिक और लचीला माध्यम है, जिसने समय और स्थान की सीमाओं को काफी हद तक समाप्त कर दिया है। इसके माध्यम से विद्यार्थी अपनी गति और सुविधा के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं तथा अनेक शैक्षिक संसाधनों तक आसानी से पहुँच बना सकते हैं। परंतु इसके बावजूद विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति पर अनेक प्रकार की चुनौतियाँ प्रभाव डालती हैं। चुनौतियों के परिणामस्वरूप कई बार विद्यार्थियों के मन में ई–लर्निंग के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो जाता है और वे अपेक्षित स्तर पर अध्ययन नहीं कर पाते। इस संदर्भ में शोधकर्ताओं, शिक्षकों और नीति–निर्माताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। ई–लर्निंग ने शिक्षा को सर्वसुलभ और लचीला बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, किंतु विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इन चुनौतियों का गहन अध्ययन और समाधान ही शिक्षण–पद्धति को अधिक प्रभावी बनाएगा, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाएगा और डिजिटल शिक्षा के सफल क्रियान्वयन का मार्ग प्रशस्त करेगा।

ई–लर्निंग

ई–लर्निंग का तात्पर्य शिक्षा और अधिगम को इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों, विशेषकर इंटरनेट और डिजिटल तकनीकों के द्वारा संपन्न करने से है। यह पारंपरिक कक्षा आधारित शिक्षा का एक विकल्प ही नहीं, बल्कि उसका विस्तार और आधुनिक रूप भी है। ई–लर्निंग में विद्यार्थी कहीं भी और कभी भी अध्ययन कर सकते हैं तथा उन्हें अपने विषयवस्तु से संबंधित संसाधनों, शिक्षकों और सहपाठियों से जुड़ने की सुविधा मिलती है। ई–लर्निंग आधुनिक शिक्षा का एक लचीला और सुलभ माध्यम है, जो विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुरूप अलग–अलग रूपों में प्रयुक्त होता है। इसके प्रमुख प्रकार हैं

- **सिंक्रोनस ई–लर्निंग** में विद्यार्थी और शिक्षक एक ही समय पर ऑनलाइन जुड़ते हैं। यह पारम्परिक कक्षा जैसा अनुभव प्रदान करता है क्योंकि इसमें शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच वास्तविक समय पर संवाद सम्भव होता है। लाइव क्लास, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और वेबिनार इसके प्रमुख उदाहरण

हैं। इस पद्धति का सबसे बड़ा लाभ यह है कि विद्यार्थियों की शंकाओं का तत्काल समाधान हो जाता है और शिक्षक विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

- **असिंक्रोनस ई–लर्निंग** में विद्यार्थी अपनी सुविधा और गति के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं। इसमें अध्ययन सामग्री पूर्व–रिकॉर्डेड रूप में उपलब्ध होती है, जैसे दृ वीडियो लेक्चर, ई–कंटेंट, पीडीएफ और इंटरैक्टिव मॉड्यूल। विद्यार्थी इन संसाधनों को बार–बार देखकर गहन समझ विकसित कर सकते हैं। यह पद्धति विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है जिन्हें समय की लचीलापन चाहिए, परन्तु इसमें तत्काल संवाद और फीडबैक का अभाव एक चुनौती बनी रहती है।
- **ब्लेंडेड लर्निंग** शिक्षा का वह रूप है जिसमें पारम्परिक कक्षा शिक्षण और ई–लर्निंग दोनों का सम्मिलन होता है। इसमें विद्यार्थी प्रत्यक्ष रूप से कक्षा में शिक्षक से सीखते हैं और साथ ही ऑनलाइन सामग्री, असाइनमेंट तथा वर्चुअल चर्चा का भी लाभ उठाते हैं। यह पद्धति विद्यार्थियों को दोनों प्रकार के अधिगम का अनुभव कराती है और इसे अधिक प्रभावी तथा व्यावहारिक बनाती है।
- **मोबाइल लर्निंग** आज के समय का सबसे लोकप्रिय रूप है, जिसमें स्मार्टफोन और टैबलेट जैसे उपकरणों के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है। इसके लिए विशेष एप्लिकेशन और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म विकसित किए गए हैं, जैसे – Byju's, Unacademy, Coursera इत्यादि। यह पद्धति विद्यार्थियों को कहीं भी और कभी भी शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा देती है। मोबाइल लर्निंग की विशेषता इसकी आसान पहुँच और इंटरैक्टिव सामग्री है, हालांकि छोटे स्क्रीन और इंटरनेट पर निर्भरता इसकी सीमाएँ भी हैं।
- **माइक्रोलर्निंग ई–लर्निंग** का एक आधुनिक और प्रभावी रूप है, जिसमें विषयवस्तु को छोटे–छोटे भागों या मॉड्यूल में विभाजित करके प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक मॉड्यूल का समय सामान्यतः कुछ मिनट से लेकर 10–15 मिनट तक होता है। इसका उद्देश्य कम समय में त्वरित और प्रभावी अध्ययन कराना है। यह पद्धति विद्यार्थियों की एकाग्रता बनाए रखने में सहायक होती है और जटिल विषयों को सरल भागों में समझने का अवसर देती है।

ई–लर्निंग की विशेषताएं

ई–लर्निंग शिक्षा की एक ऐसी पद्धति है, जिसने पारम्परिक शिक्षण को एक नया आयाम दिया है। इसकी विशेषताएँ इसे आधुनिक शिक्षा का महत्वपूर्ण माध्यम बनाती हैं।

- **समय और स्थान की लचीलापन (Flexibility):** ई–लर्निंग में विद्यार्थी कहीं भी और कभी भी अध्ययन कर सकते हैं। उन्हें कक्षा, विद्यालय या कॉलेज की चारदीवारी तक सीमित नहीं रहना

पड़ता। इस लचीलापन के कारण विद्यार्थी अपनी सुविधा और परिस्थितियों के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं।

- **अध्ययन की स्व–गति (Self&Paced Learning):** पारम्परिक कक्षा में सभी विद्यार्थियों को एक समान गति से सीखना पड़ता है, जबकि ई–लर्निंग में प्रत्येक विद्यार्थी अपनी क्षमता और आवश्यकता के अनुसार अध्ययन कर सकता है। कोई विद्यार्थी तेजी से आगे बढ़ना चाहता है तो वह कर सकता है और कोई धीमी गति से पढ़ना चाहता है तो उसे भी यह सुविधा उपलब्ध रहती है।
- **मल्टीमीडिया आधारित सामग्री:** इसमें केवल लिखित पाठ ही नहीं, बल्कि ऑडियो, वीडियो, चित्र, एनिमेशन और इंटरैक्टिव मॉड्यूल का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार की सामग्री विद्यार्थियों के लिए शिक्षा को अधिक रोचक, प्रभावी और यादगार बनाती है।
- व्यापक पहुँच (Global Access): इंटरनेट से जुड़े होने के कारण विद्यार्थी विश्वभर के शैक्षिक संसाधनों तक आसानी से पहुँच बना सकते हैं। वे किसी भी विश्वविद्यालय, विशेषज्ञ या शिक्षण मंच से जुड़कर ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। इसने शिक्षा को वैश्विक स्तर पर सुलभ बना दिया है।
- **इंटरैक्टिविटी और गेमिफिकेशन:** इंटरैक्टिविटी और गेमिफिकेशन की सुविधा भी उपलब्ध होती है। इंटरैक्टिव क्विज, प्रश्नोत्तरी, वर्चुअल गतिविधियाँ और खेल आधारित अधिगम विद्यार्थियों को सक्रिय बनाए रखते हैं। इससे सीखने की प्रक्रिया नीरस न रहकर आनंददायक और सहभागी हो जाती है।
- **अध्ययन की निरंतरता और जीवनपर्यंत अधिगम (Lifelong Learning):** ई–लर्निंग किसी एक निश्चित आयु वर्ग तक सीमित नहीं है। विद्यार्थी, शिक्षक, पेशेवर और यहाँ तक कि वरिष्ठ नागरिक भी अपनी सुविधा के अनुसार नए–नए कौशल और ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। इस प्रकार यह जीवन भर सीखने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है।

ई–लर्निंग के लाभ

ई–लर्निंग शिक्षा का ऐसा माध्यम है जिसने आधुनिक समय में ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया को सरल, सुलभ और प्रभावी बना दिया है। इसके अनेक लाभ हैं, जो न केवल विद्यार्थियों को बल्कि शिक्षकों और संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करते हैं।

- सुलभता (Accessibility): पारम्परिक शिक्षा में ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थियों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचना कठिन होता है, क्योंकि वहाँ उपयुक्त विद्यालय, महाविद्यालय या विशेषज्ञ शिक्षक उपलब्ध नहीं हो पाते। लेकिन ई–लर्निंग ने इस समस्या को काफी हद तक दूर कर दिया है। इन्टरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से अब दूर–दराज क्षेत्रों के विद्यार्थी भी शहरी क्षेत्रों की तरह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

- **आर्थिक दृष्टि से लाभकारी:** पारम्परिक शिक्षा में विद्यार्थियों को विद्यालय या कॉलेज तक आने–जाने में समय और धन दोनों खर्च होते हैं। इसके अतिरिक्त पुस्तकों, नोट्स और अन्य भौतिक संसाधनों पर भी खर्च अधिक आता है। ई–लर्निंग में इन सबकी आवश्यकता बहुत कम हो जाती है। विद्यार्थी घर बैठे शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, जिससे यात्रा और संसाधनों पर होने वाला खर्च बचता है।
- **विविध संसाधनों की उपलब्धता:** पारम्परिक शिक्षा में विद्यार्थियों को सीमित पाठ्य सामग्री मिलती है, जबकि ई–लर्निंग में इन्टरनेट पर एक ही विषय के लिए अनेक स्रोत उपलब्ध होते हैं। विद्यार्थी विभिन्न विशेषज्ञों के व्याख्यान सुन सकते हैं, वीडियो, ऑडियो, ई–पुस्तकें और शोध लेखों का अध्ययन कर सकते हैं। इससे उनकी समझ अधिक गहरी और व्यापक हो जाती है।
- **व्यक्तिगत अधिगम:** पारम्परिक कक्षा में सभी विद्यार्थियों को एक साथ पढ़ाया जाता है, जिससे हर विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा कर पाना कठिन हो जाता है। लेकिन ई–लर्निंग में प्रत्येक विद्यार्थी अपनी रुचि, गति और आवश्यकता के अनुसार अध्ययन कर सकता है। जो विद्यार्थी किसी विषय को जल्दी समझ लेता है, वह आगे बढ़ सकता है, जबकि जिसे अधिक समय चाहिए वह धीरे–धीरे अध्ययन कर सकता है।
- **तकनीकी कौशल का विकास:** चूँकि विद्यार्थी लगातार डिजिटल उपकरणों, सॉफ्टवेयर, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और विभिन्न एप्लिकेशनों का उपयोग करते हैं, इसलिए वे तकनीकी रूप से दक्ष हो जाते हैं। यह कौशल न केवल शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि भविष्य के व्यावसायिक जीवन में भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

ई–लर्निंग से विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति में आने वाली चुनौतियाँ

ई–लर्निंग ने शिक्षा की दुनिया में नई संभावनाओं का द्वार खोला है। यह शिक्षा को लचीला, सर्वसुलभ और समयानुकूल बनाने में सहायक सिद्ध हुई है। परन्तु इसके साथ–साथ यह भी देखा गया है कि ई–लर्निंग के कारण विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति पर कई प्रकार की चुनौतियाँ सामने आती हैं। अध्ययन प्रवृत्ति से आशय विद्यार्थियों की सीखने की रुचि, एकाग्रता, अनुशासन, आत्म–नियंत्रण और प्रेरणा की प्रवृत्तियों से है। जब यह प्रवृत्ति प्रभावित होती है तो विद्यार्थी का अधिगम अधूरा या कमजोर हो सकता है।

1. **तकनीकी चुनौतियाँ:** ई–लर्निंग का सबसे पहला और बड़ा अवरोध तकनीकी सीमाओं से जुड़ा हुआ है। अनेक विद्यार्थियों को पर्याप्त इंटरनेट सुविधा नहीं मिल पाती। साथ ही, सभी के पास लैपटॉप, स्मार्टफोन या टैबलेट जैसे उपकरण उपलब्ध नहीं होते। तकनीकी ज्ञान का अभाव भी कई विद्यार्थियों

के लिए एक समस्या है। इन कारणों से उनकी अध्ययन प्रवृत्ति बाधित होती है और वे नियमित रूप से ऑनलाइन अध्ययन करने में कठिनाई महसूस करते हैं।

2. **प्रेरणा और अनुशासन की कमीः** पारम्परिक कक्षा में शिक्षक की उपस्थिति विद्यार्थियों को पढ़ाई के प्रति प्रेरित और अनुशासित बनाए रखती है। परंतु ई–लर्निंग में यह प्रत्यक्ष निगरानी नहीं होती। विद्यार्थी अक्सर आलस्य, उदासीनता और टालमटोल की प्रवृत्ति प्रदर्शित करने लगते हैं। आत्म–प्रेरणा की कमी के कारण उनकी अध्ययन प्रवृत्ति कमजोर पड़ जाती है।
3. **एकाग्रता में बाधाः** ऑनलाइन माध्यम में विद्यार्थियों के सामने अनेक प्रकार के आकर्षण होते हैं, जैसे– सोशल मीडिया, गेम्स, वीडियो और अन्य डिजिटल सामग्री। इससे विद्यार्थियों का ध्यान पढ़ाई से हटकर मनोरंजन की ओर चला जाता है। लम्बे समय तक स्क्रीन पर टिके रहने से भी उनकी एकाग्रता प्रभावित होती है। यह विचलन उनकी अध्ययन प्रवृत्ति पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।
4. **सामाजिक एवं भावनात्मक अलगावः** कक्षा आधारित शिक्षा में विद्यार्थी सहपाठियों और शिक्षकों के साथ प्रत्यक्ष रूप से संवाद करते हैं, जिससे उनकी अध्ययन रुचि और सहभागिता बनी रहती है। परन्तु ई–लर्निंग में संवाद सीमित हो जाता है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी अकेलापन महसूस करते हैं, उनकी सामाजिक सहभागिता घटती है और वे भावनात्मक रूप से भी प्रभावित होते हैं। यह अलगाव उनकी अध्ययन प्रवृत्ति को कमजोर करता है।
5. **मूल्यांकन और फीडबैक की कठिनाइयाँः** ऑनलाइन परीक्षाएँ और मूल्यांकन अक्सर पारम्परिक परीक्षाओं जितने प्रभावी और विश्वसनीय नहीं माने जाते। विद्यार्थियों को व्यक्तिगत फीडबैक समय पर नहीं मिल पाता, जिससे वे अपनी कमियों को पहचानकर सुधार नहीं कर पाते। यह स्थिति उनकी अध्ययन प्रवृत्ति को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

   सांस्कृतिक और भाषाई अवरोधः अनेक विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन सामग्री की भाषा एक बड़ी चुनौती बनती है। ग्रामीण अथवा गैर–अंग्रेजी भाषी विद्यार्थी तकनीकी शब्दावली और जटिल भाषा को समझने में कठिनाई महसूस करते हैं। इससे वे अध्ययन में रुचि खो देते हैं और धीरे–धीरे उनकी अध्ययन प्रवृत्ति प्रभावित हो जाती है।

चुनौतियों को दूर करने के उपाय

ई–लर्निंग ने शिक्षा की पहुँच और स्वरूप को नया आयाम दिया है। परंतु विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति में आने वाली चुनौतियाँ इस पद्धति को पूर्णतः प्रभावी बनाने में बाधक हैं। इन चुनौतियों को दूर करने के लिए विभिन्न स्तरों – तकनीकी, शैक्षिक, सामाजिक और व्यक्तिगत पर ठोस उपाय किए जा सकते हैं।

- तकनीकी चुनौतियों का समाधान आवश्यक है, क्योंकि यही विद्यार्थियों के लिए सबसे बड़ी बाधा बनकर सामने आती हैं। इसके लिए सरकार और शैक्षणिक संस्थानों को ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों तक सुलभ और किफायती इन्टरनेट सुविधा पहुँचानी चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी को स्मार्टफोन, टैबलेट अथवा लैपटॉप जैसे उपकरण वितरण योजनाओं के माध्यम से उपलब्ध कराए जाएँ। साथ ही, विद्यार्थियों और अभिभावकों को डिजिटल साक्षरता का प्रशिक्षण देकर तकनीकी ज्ञान में दक्ष बनाया जाना चाहिए, ताकि वे ई–लर्निंग का सहजता से लाभ उठा सकें।
- प्रेरणा और अनुशासन को बढ़ाना है, चूँकि ई–लर्निंग में आत्म–प्रेरणा और आत्म–अनुशासन का महत्त्व अधिक होता है, इसलिए शिक्षकों को चाहिए कि वे शिक्षण को रोचक और प्रेरक बनाने के लिए गेमिफिकेशन तकनीक, जैसे अंक, बैज और पुरस्कार का उपयोग करें। इसके अतिरिक्त, नियमित असाइनमेंट, क्विज और लक्ष्य निर्धारण जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को सक्रिय और अनुशासित बनाए रखने में सहायक हो सकती हैं। प्रेरक वीडियो, परामर्श और व्यक्तिगत मार्गदर्शन से विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति को सकारात्मक दिशा दी जा सकती है।
- एकाग्रता बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। ऑनलाइन कक्षाओं को संक्षिप्त, रोचक और सहभागितापूर्ण बनाया जाए, ताकि विद्यार्थी ऊब महसूस न करें। अध्ययन सामग्री में वीडियो, ऑडियो, ग्राफिक्स और एनिमेशन का संतुलित उपयोग उनकी रुचि बनाए रख सकता है। साथ ही विद्यार्थियों को समय प्रबंधन और आत्म–नियंत्रण जैसे कौशल सिखाकर उन्हें अध्ययन और अन्य गतिविधियों में संतुलन बनाने की क्षमता प्रदान की जानी चाहिए।
- सामाजिक और भावनात्मक अलगाव की समस्या को कम करना भी आवश्यक है। इसके लिए ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म पर चर्चा मंच, समूह कार्य और ऑनलाइन क्लब जैसी गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं। शिक्षक समय–समय पर विद्यार्थियों से व्यक्तिगत संवाद करें ताकि वे अकेलापन महसूस न करें। सहपाठियों के बीच ऑनलाइन वाद–विवाद, समूह चर्चा और सहयोगात्मक परियोजनाएँ विद्यार्थियों को सामाजिक रूप से सक्रिय बनाए रखेंगी।
- मूल्यांकन और फीडबैक को प्रभावी बनाना केवल ऑनलाइन परीक्षाओं पर निर्भर रहने के बजाय प्रोजेक्ट, असाइनमेंट और व्यावहारिक गतिविधियों पर आधारित मूल्यांकन को अपनाया जाना चाहिए। शिक्षकों को विद्यार्थियों को समय पर व्यक्तिगत फीडबैक देना चाहिए ताकि वे अपनी प्रगति और कमियों को पहचान सकें। इसके साथ ही, स्वचालित मूल्यांकन प्रणालियाँ (जैसे एआई आधारित फीडबैक टूल) उपयोग करके फीडबैक प्रक्रिया को तेज और सटीक बनाया जा सकता है।
- सांस्कृतिक और भाषाई अवरोध को कम करना भी आवश्यक है। ई–लर्निंग सामग्री को बहुभाषी स्वरूप में उपलब्ध कराया जाना चाहिए ताकि विभिन्न पृष्ठभूमि के विद्यार्थी इसे सहजता से समझ

सकें। ग्रामीण और गैर–अंग्रेजी भाषी विद्यार्थियों के लिए सरल भाषा का उपयोग किया जाए। दृश्य सामग्री जैसे इन्फोग्राफिक्स, एनिमेशन और स्थानीय उदाहरणों के प्रयोग से भाषाई कठिनाई को कम किया जा सकता है और शिक्षा अधिक रोचक तथा प्रासंगिक बन सकती है।

निष्कर्ष

ई–लर्निंग ने शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। इसने विद्यार्थियों को समय और स्थान की सीमाओं से मुक्त कर अध्ययन के नए अवसर प्रदान किए हैं। ऑनलाइन सामग्री, मल्टीमीडिया संसाधन और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने शिक्षा को अधिक लचीला, आकर्षक और व्यापक बनाया है। परंतु यह भी स्पष्ट है कि ई–लर्निंग की सफलता केवल संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति पर भी उसका सीधा प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि ई–लर्निंग से विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति में कई प्रकार की चुनौतियाँ सामने आती हैं। तकनीकी सुविधाओं का अभाव, इन्टरनेट और उपकरणों की कमी, आत्म–अनुशासन और आत्म–प्रेरणा की कमी, एकाग्रता की समस्या, सामाजिक एवं भावनात्मक अलगाव, मूल्यांकन और फीडबैक की कठिनाइयाँ तथा भाषाई अवरोध विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति को प्रभावित करते हैं। इन कारणों से विद्यार्थी कभी–कभी ई–लर्निंग के प्रति उदासीन और नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर लेते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पातीं। फिर भी यह तथ्य नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता कि ई–लर्निंग शिक्षा को सर्वसुलभ और लचीला बनाने में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो रही है। यदि इन चुनौतियों की पहचान कर उनके व्यावहारिक समाधान खोजे जाएँ तो ई–लर्निंग विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार और उपलब्धि दोनों को सकारात्मक दिशा में ले जा सकती है। तकनीकी सुविधाओं का विस्तार, प्रेरणा और अनुशासन का विकास, इन्टरक्टिव और गेमिफिकेशन आधारित शिक्षण, सामाजिक सहभागिता के अवसर, प्रभावी मूल्यांकन व्यवस्था और बहुभाषी सामग्री का उपयोग इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम हो सकते हैं।

सुझावः

ई–लर्निंग से विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यद्यपि डिजिटल शिक्षा ने शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया को नए अवसर प्रदान किए हैं, फिर भी इसके प्रभावी और सफल क्रियान्वयन के लिए अनेक सुधारों की आवश्यकता है। अध्ययन के आधार पर कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव इस प्रकार प्रस्तुत किए जा सकते हैं–

- तकनीकी सुविधाओं का विस्तार और समान वितरण अत्यंत आवश्यक है। सरकार और शैक्षणिक संस्थानों को चाहिए कि वे ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों तक उच्च गति का इन्टरनेट तथा आवश्यक उपकरण (लैपटॉप, टैबलेट, स्मार्टफोन) पहुँचाने के लिए योजनाएँ बनाएं। साथ ही विद्यार्थियों और

अभिभावकों के लिए डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाएँ ताकि वे तकनीक का सही उपयोग कर सकें।

- आत्म–अनुशासन और आत्म–प्रेरणा का विकास करने के लिए शिक्षण को रोचक और सहभागी बनाया जाना चाहिए। इसके लिए ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म पर गेमिफिकेशन (जैसे– अंक, बैज, पुरस्कार), क्विज, इन्टरैक्टिव मॉड्यूल और वर्चुअल प्रतियोगिताएँ शामिल की जा सकती हैं। शिक्षक समय–समय पर विद्यार्थियों को प्रेरक मार्गदर्शन दें और उन्हें स्पष्ट अध्ययन लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- एकाग्रता बढ़ाने और ध्यान भटकाव कम करने के उपाय किए जाने चाहिए। इसके लिए शिक्षण सामग्री को छोटे–छोटे मॉड्यूल में प्रस्तुत किया जाए और उसमें मल्टीमीडिया साधनों का संतुलित उपयोग हो। साथ ही विद्यार्थियों को समय प्रबंधन और आत्म–नियंत्रण सम्बन्धी कौशल सिखाए जाएँ, ताकि वे ऑनलाइन अध्ययन को प्रभावी ढंग से संचालित कर सकें।
- सामाजिक और भावनात्मक जुड़ाव का अवसर मिलना चाहिए। इसके लिए चर्चा मंच (Discussion Forums), समूह कार्य (Group Projects), वर्चुअल क्लब और ऑनलाइन सांस्कृतिक गतिविधियाँ आयोजित की जाएँ। शिक्षक व्यक्तिगत संवाद और नियमित फीडबैक के माध्यम से विद्यार्थियों के अकेलेपन की भावना को दूर कर सकते हैं।
- मूल्यांकन और फीडबैक प्रणाली को अधिक विश्वसनीय और प्रभावी बनाया जाना चाहिए। ऑनलाइन मूल्यांकन में केवल वस्तुनिष्ठ प्रश्नों पर निर्भर रहने की बजाय प्रोजेक्ट, असाइनमेंट, केस स्टडी और प्रस्तुति आधारित मूल्यांकन शामिल किया जाए। विद्यार्थियों को समय पर व्यक्तिगत फीडबैक देना भी आवश्यक है ताकि वे अपनी प्रगति और कमियों को पहचान सकें।
- सांस्कृतिक और भाषाई विविधता का ध्यान रखना आवश्यक है। शिक्षण सामग्री को बहुभाषी स्वरूप में उपलब्ध कराया जाए और कठिन तकनीकी शब्दावली के स्थान पर सरल और सहज भाषा का प्रयोग किया जाए। साथ ही स्थानीय उदाहरणों और सांस्कृतिक संदर्भों को शामिल करके अध्ययन सामग्री को अधिक प्रासंगिक और समझने योग्य बनाया जा सकता है।

उपसंहार

ई–लर्निंग छात्रों के लिए एक प्रभावशाली माध्यम है, किंतु इसके साथ–साथ इसमें छात्रों को कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षकों के साथ प्रत्यक्ष संवाद का अवसर सीमित हो जाता है। अतः वैश्विक संदर्भ में यह अपेक्षा की जाती है कि कक्षा शिक्षण को भी प्राथमिकता दी जाए, क्योंकि यह एक प्रभावशाली माध्यम है जिसके अंतर्गत विषयवस्तु के आधार पर छात्रों को व्यापक एवं विविध प्रकार की जानकारी प्रदान की जाती है। परिणामस्वरूप, कक्षा शिक्षण छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. क्लार्क, रिचर्ड सी. एवं मेयर, रिचर्ड ई. (2016). ई–लर्निंग एंड द साइंस ऑफ इंस्ट्रक्शन. वाइली प्रकाशन।
2. हॉर्टन, विलियम (2012). ई–लर्निंग बाय डिजाइन. प्फाइफर प्रकाशन।
3. एली, मोहम्मद (2009). मोबाइल लर्निंगः ट्रांसफॉर्मिंग द डिलीवरी ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग. एथाबास्का यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. बेट्स, ए.डब्ल्यू. (2015). टीचिंग इन ए डिजिटल एजः गाइडलाइंस फॉर डिजाइनिंग टीचिंग एंड लर्निंग. टोनी बेट्स एसोसिएट्स।
5. गैरीसन, डी.आर. एवं वॉन, एन.डी. (2008). ब्लेंडेड लर्निंग इन हायर एजुकेशन. जोसी–बास।
6. खान, सलमान (2012). द वन वर्ल्ड स्कूलहाउसः एजुकेशन रीइमैजिन्ड. ट्वेल्व प्रकाशन।
7. सिंह, हरिनंदन (2017). ई–लर्निंग और शिक्षा में प्रौद्योगिकी. नई दिल्लीः एन.सी.ई.आर.टी. प्रकाशन।
8. शर्मा, राजीव (2019). डिजिटल शिक्षा और ई–लर्निंग की चुनौतियाँ. लखनऊः शिक्षा प्रकाशन।
9. सुन, पी.सी., त्साई, आर.जे., फिंगर, जी., चेन, वाई.वाई. एवं येह, डी. (2008). सफल ई–लर्निंग को प्रभावित करने वाले कारकः एक अनुभवजन्य अध्ययन। कम्प्यूटर्स एंड एजुकेशन, 50(4), 1183–1202।
10. सेलीम, एच.एम. (2007). ई–लर्निंग स्वीकार्यता के लिए महत्वपूर्ण सफलता कारक। कम्प्यूटर्स एंड एजुकेशन, 49(2), 396–413।
11. मुइलेनबर्ग, एल.वाई. एवं बर्ज, जेड.एल. (2005). ऑनलाइन अधिगम में विद्यार्थियों की बाधाएँ। डिस्टेंस एजुकेशन, 26(1), 29–48।
12. झांग, डी., झाओ, जे.एल., झोउ, एल. एवं नुनामेकर, जे.एफ. (2004). क्या ई–लर्निंग पारंपरिक कक्षा का स्थान ले सकता है? कम्युनिकेशन्स ऑफ द ए.सी.एम., 47(5), 75–79।
13. मिश्रा, संजय एवं शर्मा, आर.सी. (2005). इंटरैक्टिव मल्टीमीडिया इन एजुकेशन एंड ट्रेनिंग. आईडिया ग्रुप पब्लिशिंग।
14. एली, मोहम्मद (2004). ऑनलाइन अधिगम हेतु शैक्षिक सिद्धांत की नींव। टी. एंडरसन एवं एफ. एलौमी (संपादक), थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ ऑनलाइन लर्निंग. एथाबास्का यूनिवर्सिटी।
15. सिंह, विनोद एवं चौहान, प्रीति (2020). ई–लर्निंग में विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति की समस्याएँ और संभावनाएँ। भारतीय शिक्षा समीक्षा, 65(3), 112–120।
16. गुप्ता, अंजली (2021). डिजिटल शिक्षाः अवसर और चुनौतियाँ। शिक्षा विमर्श, 18(2), 44–55।

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

डॉ0 शिवकेश मिश्र, "ई–लर्निंग से विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन" *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 2, Issue 4, pp.299-309, June 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 शिवकेश मिश्र

For publication of research paper title

ई–लर्निंग से विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्ति में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-04, Month June 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/